शास. प्राथमिक शाला विश्रामपुर

प्रधान पाठक का परिचय

नाम	—	श्रीमती रेणुका वर्मा
पद	—	सहायक शिक्षक (एल.बी) वर्तमान में प्रभारी प्रधान पाठक के पद पर कार्यरत है।
जन्म तिथि	—	17—10—1984
पदस्थ शाला	—	शास. प्राथमिक शाला विश्रामपुर
प्रथम नियुक्ति तिथि	—	09—06—2005
शैक्षणिक योग्यता	—	बी.ए. अंग्रेजी साहित्य, हिंदी साहित्य, समाजशास्त्र
व्यावसायिक योग्यता	—	डी.एड.

शाला के संदर्भ में:—

ग्राम विश्रामपुर (नकटी) ग्राम पंचायत तुलसी (मानपुर) के आश्रित कम जनसंख्या वाला छोटा गांव है। यहां 19—10—1974 को शासकीय नवीन प्राथमिक शाला कक्षा पहिली के कुल दर्ज 23 विद्यार्थियों के साथ प्रारंभ हुआ। अध्यापन हेतु प्राथमिक शाला तुलसी में पदस्थ सहायक शिक्षक श्री राघवराम बघेल जी की व्यवस्था की गई थी। शाला भवन निर्मित नहीं होने के कारण शाला का संचालन गांव के परसार में किया जाता था। अगले सत्र 1975—76 में कक्षा 1 व 2 की कुल दर्ज 39 हो गई तथा श्री प्रेमलाल वर्मा (सहायक शिक्षक) शाला में पदस्थ थे। सत्र बढ़ने के साथ ही कक्षाएं और दर्ज बढ़ती गई और शाला भवन सत्र 1975 में निर्माण कार्य पूर्ण हो गई।

सत्र 1978—79 में विद्यालय में कक्षा पहली से पांचवी तक कक्षाएं संचालित होने लगी छात्रों की कुल दर्ज संख्या 59 हो गई। इस सत्र में प्रभारी प्रधान पाठक के पद पर श्री घनश्याम वर्मा जी कार्यरत थे। गांव में विद्यालय होने के कारण बच्चों का दाखिला बढ़ता गया और दर्ज बढ़ता गया। कक्ष एवं शिक्षकों की कमी के कारण बहुकक्षा शिक्षण किया जाता था । सत्र 2000—01 में नवीन शाला भवन का निर्माण हुआ। नए भवन में चार कक्ष तथा एक बरामदा बनाए जिससे बच्चों को और शिक्षकों को पढ़ने तथा पढ़ाने में सुविधा हुई। इस सत्र में शाला में दो शिक्षक पदस्थ थे। सत्र 2005—06 में मध्यान भोजन के सफल एवं स्वच्छ संचालन हेतु किचन शेड का निर्माण कार्य किया गया एवं 11 वें वित्त आयोग के तहत एक अतिरिक्त कक्ष निर्माण शाला परिसर में किया गया ।बालिकाओं की सुरक्षा हेतु तथा बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु शाला परिसर में एक बालिका शौचालय बनवाया गया। सत्र 2008-09 में पूर्व पदस्थ दोनों शिक्षकों का स्थानांतरण होने के पश्चात शाला में श्रीमती रेणुका वर्मा प्रभारी प्रधान पाठक के रूप में एक ही शिक्षिका थी। सत्र 2009-10 में शाला में एक प्रधान पाठक तथा एक सहायक शिक्षक की पदस्थापना हुई जिससे शाला में अब 3 शिक्षक थे । इस सत्र में एक अतिरिक्त कक्ष सृजन कक्षा का निर्माण हुआ , जहां MGML के तहत शिक्षण कार्य किया जाता था। सत्र 2012-13 में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए एक बालक तथा एक बालिका शौचालय का निर्माण के साथ हुआ। जो समावेशी शिक्षा में सहायक सिद्ध हुई। सत्र 2014-15 में अतिशेष के अंतर्गत 1 सहायक शिक्षक का युक्तियुक्त करण किया गया एवं प्रधान पाठक श्री भूखन लाल तिवारी जी ने स्वास्थ्य समस्याओं के कारण अपना स्थानांतरण अपने गृह ग्राम में करा लिया। जिससे शाला पुनः एक शिक्षकीय हो गई और संकुल के अंतर्गत शैक्षणिक व्यवस्था एक शिक्षक की हुई । सत्र 2014-15 में शाला की पुरानी चार दीवारी को तोड़कर परिसर को बढ़ाया गया तथा दीवार को ऊंचा भी किया गया। अब परिसर के अंदर बच्चों के लिए मैदान एवं

वृक्षारोपण तथा बागवानी हेतु पर्याप्त स्थान हो गया । एक बालक शौचालय का भी निर्माण हुआ। शाला में 2 सामान्य तथा दो CWSN शौचालय निर्मित हो गए। शाला सुरक्षा के लिए शाला को सत्र 2015-16 में अग्निशमन उपकरण भी प्राप्त हुआ। सत्र 2018—19 में एक और शिक्षक की पदस्थापना शासकीय प्राथमिक शाला विश्रामपुर में हुई।

सत्र 2018—19 में शाला मरम्मत, इको क्लब , खेल गठिया की राशि का पूर्ण उपयोग शाला के विकास एवं बच्चों की सुविधाओं के लिए किया गया। इस हेतु 12 जोड़ी टेबल बेंच बनवाया गया और शाला भवन की दीवारों पर प्रिंट—रिच वातावरण निर्माण हेतु चित्र एवं लेखन कार्य कराया गया । जिससे बच्चों में स्कूल के प्रति आकर्षण तथा उत्साह में वृद्धि हुई। सत्र 2021—22 में परिसर के अंदर बोर खनन कराया गया, जिससे स्वच्छता तथा बागवानी कार्य को बढ़ावा मिला। सत्र 2021-22 में शाला को एक अतिरिक्त कक्ष की स्वीकृति मिली जिसका निर्माण कार्य सत्र 2022—23 में पूर्ण हुआ जहां वर्तमान में मुस्कान पुस्तकालय संचालित हो रही है। मरम्मत हेतु प्राप्त राशि से जर्जर भवन ,छत मरम्मत के साथ परिसर में क्यारी निर्माण के साथ ही शौचालय में रनिंग वाटर, हाथ धोने के लिए चार पॉइंट नल का कनेक्शन कराया गया। किचन के लिए वॉश एरिया में भी नल व्यवस्था की गई।

वर्तमान सत्र 2022—23 में शासकीय प्राथमिक शाला विश्रामपुर स्वच्छ सुंदर एवं छात्रों हेतु सुविधा युक्त है। शाला में कुल दर्ज 29 है तथा 2 शिक्षक पदस्थ है।

TLP में चुनौतियां:—

शासकीय प्राथमिक शाला विश्रामपुर में सत्र 2008—09 से पूर्व दो शिक्षक कार्यरत थे। जिनमें से एक शिक्षक प्रधान पाठक पदोन्नत होकर नए स्कूल में चले गए तथा अन्य शिक्षक स्थानांतरण से अन्यत्र शाला में चले गए। इस सत्र में श्रीमती रेणुका वर्मा ने शाला में कार्यभार ग्रहण किया। प्रभारी प्रधान पाठक का पद ग्रहण के साथ ही शाला में एकल शिक्षिका थी। पांच कक्षाओं में 1 शिक्षक द्वारा अध्यापन कार्य के साथ कार्यालयीन कार्यों को भी समय पर पूर्ण करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य था। बच्चों में पढ़ाई और शाला के प्रति उत्साह भी नहीं था, उपस्थिति में निरंतरता नहीं होती थी। कक्षा में अध्यापन तथा अनुशासन बनाए रखने में काफी परेशानियां होती थी। बच्चों का स्तर बहुत कमजोर था एवं पालको का भी इस पर ध्यान नहीं था। पढ़ाई का क्रम चलता तो बच्चों की उपस्थिति निरंतर नहीं होती थी। अपने घरेलू कार्यों में बच्चों को लगाया जाता था इसलिए उन्हें पढ़ाई तथा प्रतिदिन स्कूल आने की रूचि नहीं होती थी। गृह कार्य के प्रति बच्चे तथा पालक भी

उदासीन रहते थे। पालकों को भी बच्चों की पढ़ाई के प्रति रुचि नहीं दिखती थी उनसे संपर्क करने पर अपने कार्यों में व्यस्तता मजबूरी बताई जाती थी। उनके पास स्कूल आने तथा शिक्षकों से संपर्क करने के लिए समय नहीं होता था। SMC बैठक में एक 2 सदस्य ही उपस्थित होते थे जिसके कारण इस समस्याओं का समाधान नहीं हो पाता था। बच्चों में सीखने की गति धीमी थी।

पारिवारिक तथा सामाजिक माहौल की कुछ बुरी आदतें भी बच्चों को प्रभावित कर रही थी। अपशब्दों का प्रयोग तथा कुछ बुरी चीजों की आदत भी उनके मस्तिष्क तथा स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालती थी। साथ ही आश्रित ग्राम होने के कारण सुधार एवं विकास हेतु शाला में किसी तरह का विशेष सहयोग नहीं मिलता था। एक शिक्षक की शाला में सफल संचालन बहुत कठिन कार्य था, बच्चों में जिम्मेदारी और अनुशासन का नहीं होना भी एक कारण था। बच्चों को सामान्य स्तर पर पहुंचाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य था।

<u>TLP की प्राप्ति:—</u>

प्रिंट रिच एवं लर्निंग कॉर्नर:— TLP प्राप्ति हेतु सबसे महत्वपूर्ण कदम बच्चों को स्कूल से जोड़ना है। उनमें स्कूल एवं पढ़ाई के प्रति रुचि होना बहुत जरूरी है। इस दिशा में बच्चों के लिए शाला भवन को आकर्षक रूप दिया गया। उनको अलग-अलग जिम्मेदारियां देकर उनका उत्साहवर्धन करते हुए निरंतर स्कूल आने के लिए प्रेरित किया गया। एक शिक्षकीय शाला में शिक्षिका द्वारा बहु कक्षा शिक्षण का कार्य किया जाता था। कक्षा में छात्रों में समूह में पढ़ना तथा कमजोर बच्चों की मदद करने के साथ बड़ी कक्षा के बच्चे छोटी कक्षाओं के बच्चों को पढ़ाई में सहायता करने लगे। साथ ही कुछ बच्चों को कमजोर बच्चों की जिम्मेदारी दी जाती थी जिससे बच्चों में घर में भी पढ़ने की आदत बनी। स्कूल में शिक्षक के साथ बच्चे भी शिक्षक में सहायता करना प्रारंभ किए। लघु एवं दीर्घ अवकाश तथा भोजन के समय भी बच्चे मौखिक रूप से गिनती, पहाड़ा,वर्णमाला, बारहखडी,अंग्रेजी वर्णमाला को एक साथ पढ़ते थे। इसके परिणाम यह होता था कि जो नवप्रवेशी या कमजोर बच्चे मौखिक पढ़ना सीखते थे फिर उनके लिखित ज्ञान तथा पहचान करना सिखाना आसान हो जाता था। सीखने सिखाने का यह क्रम अभी भी विद्यालय भी जारी है। विद्यालय बच्चों के सीखने हेतु प्रिंट रिच वातावरण तैयार किया गया। भवन की दीवारों पर जहां बच्चे खेलते हैं चित्र तथा लेखन कार्य आकर्षक रूप से कराया गया। जिसे देखने और पढ़ने की रुचि बच्चों में पैदा हुई और ज्ञान में भी वृद्धि हुई। साथ सभी कक्षाओं में भी स्तर के अनुरूप चित्र चार्ट लेखन कार्य बच्चों के लिए सीखने में सहायक सिद्ध हुआ। रंग बिरंगी तथा नई-नई चीजें बच्चों को लुभाने का कार्य करती है तथा उनके साथ गतिविधि करने को बच्चे आनंदित होते हैं और सीखते भी हैं।

पुरस्कृत करना:— साथ ही निरंतर उपस्थित एवं प्रतिदिन गृह कार्य करने वाले छात्रों में माह के अंत में पुरस्कृत किया जाता है। जिससे छात्रों में प्रतिस्पर्धा का भाव जागृत होता है विभिन्न पदों से प्राप्त राशि का उपयोग भी इस कार्य में सहायक सिद्ध होता है। इस क्रम में हमारी शाला में बच्चों के बैठने के लिए टेबल तथा बेंच बनवाया गया जो बच्चों की खुशी के रूप शाला से उन्हें जोड़ता है। बच्चों में अनुशासनए उत्साह तथा पढ़ाई को रुचिकर बनाने के प्रयास से उनका स्तर सुधार हुआ।

SMC का सहयोग:— शाला के सफल संचालन में शाला प्रबंधन समिति की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इस हेतु समिति को शाला से जोड़ने का प्रयास किया गयाए उन्हें उनके अधिकारों एवं कर्तव्यों से अवगत कर शाला के विकास हेतु जिम्मेदार बनाया गया। जिससे शाला को समिति का पूर्ण सहयोग प्राप्त होने लगा। एक शिक्षकीय शाला में मानसेवी शिक्षिका की व्यवस्था के साथ ही शाला की सुरक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाता है। शाला प्रबंधन समिति की बैठकों में सभी समस्याओं पर चर्चा होने लगी और उनका समाधान होना प्रारंभ हुआ। बच्चों की उपस्थिति के लिए पालकों से संपर्क करने का कार्य भी समिति के द्वारा किया जाने लगा। माताओं को शाला से जोड़ना उन्मुखीकरण कार्यक्रम के माध्यम से माताओं को शाला से जोड़ा गया, उनके अंदर विद्यालय के प्रति झिझक दूर किया गया। अब वे सभी बैठकों में उपस्थित होने लगी। माताओं को बच्चों की निरंतर उपस्थिति तथा गृह कार्यों के लिए सहयोग की अपेक्षा हमारे द्वारा रखी गई माताओं का सहयोग हमेशा माताओं का विशेष योगदान है।

सहायक शिक्षण सामग्री:— शाला में बच्चों की सीखने की गति को बढ़ाने के लिए कक्षा में लर्निंग कॉर्नर बनाए गए। सहायक शिक्षण सामग्रियों का निर्माण कर उनके द्वारा बच्चों को गतिविधि के साथ शिक्षण कार्य प्रारंभ करने से बच्चे देखकर, स्वयं करके, समझकर सीखने लगे। खेल—खेल में पढ़ाई छोटे बच्चों के लिए रोचक होने लगी। खेल में कई अवधारणाओं को बच्चे सीखने लगे। कक्षा पहली एवं दूसरी के बच्चे गिनती, जोड़ और घटाना की अवधारणा को समझ पाते हैं। शाला को प्राप्त TLM का उपयोग प्रतिदिन किया जाता है और बच्चे उन से सीखते हैं और उनकी उपलब्धि स्तर में भी सुधार होता है। बच्चों में अच्छी आदतें एवं अनुशासन जगाने के लिए पुस्तकालय की पुस्तकों का वाचन तथा प्रेरणादायक कहानियां नीति वाक्य भी पढ़ाया जाता है। माताओं से निरंतर संपर्क किया जाता है।

<u>वर्तमान में स्कूल:—</u>

वर्तमान में शासकीय प्राथमिक शाला विश्रामपुर परिसर हरा भरा तथा स्वच्छ है। भवन की दीवारों पर प्रिंट रिच वातावरण निर्मित है जिससे विद्यार्थियों के स्तर सुधार में मदद मिल रही है। बच्चों में वर्ण पहचान, शब्दकोश विकसित हो रहे हैं तथा स्कूल के प्रति रुचि बढ़ी है। छोटे बड़े सभी बच्चे इसका लाभ ले रहे हैं। साथ ही कक्षाओं में मध्यान भोजन कक्ष तथा बरामदे की दीवारों पर लर्निंग कॉर्नर बनाए गए हैं जो कि शिक्षण कार्य तथा बच्चों की उपलब्धि स्तर विकास में सहायक सिद्ध होते हैं। मुस्कान पुस्तकालय शाला में संचालित है प्रतिदिन दीर्घ अवकाश के पश्चात बच्चे पुस्तक वाचन करते हैं तथा कहानी पुस्तक से पढ़ी कहानियों को शनिवार की गतिविधि में प्रस्तुत भी करते हैं। नैतिक कहानियों से बच्चों में सद्गुणों का भी विकास हो रहा है।

शाला में सभी मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध है। बच्चों के लिए टेबल—बेंच उपलब्ध है, जिससे बच्चों में स्कूल आने तथा शाला सामानों की सुरक्षा का भाव भी विकसित हो रहा है। सभी कक्षों में पंखा तथा लाइट की व्यवस्था है। परिसर के अंदर ही बोर होने से शाला की सफाई, बच्चों की स्वच्छता हेतु पूरे समय पानी उपलब्ध होता है।

बालक—बालिकाओं के लिए अलग-अलग शौचालय उपलब्ध है, जहां रनिंग वाटर की व्यवस्था है। बच्चों के हाथ धोने के लिए नल एवं स्वच्छता हेतु आवश्यक है।

बच्चों के खेलने के लिए परिसर के अंदर ही खेल का मैदान है,विभिन्न प्रकार के क्रीड़ा सामान भी उपलब्ध है। खेल के समय में बच्चों को उपलब्ध कराए जाते हैं क्योंकि खेल बच्चों के शारीरिक विकास के लिए आवश्यक है। प्रतिवर्ष शाला में बच्चों का स्वास्थ्य परीक्षण भी होता है। बच्चों को सफाई एवं अच्छे स्वास्थ्य के लिए आवश्यक जानकारी दी जाती है जैसे साफ गणवेश, नाखून, बाल तथा दांत की सफाई की प्रतिदिन प्रार्थना के समय स्वास्थ्य मंत्री के द्वारा जांच की जाती है।

शाला परिसर में वृक्षारोपण भी किया गया है। वर्तमान में परिसर में करन, नीम, गुलमोहर, नीलगिरी, नीबू, करौंदा, अमरुद, मुनगा आदि के वृक्ष हैं। परिसर में क्यारियों का रखरखाव भी बच्चों के सहयोग से किया जाता है। क्यारी में मौसमी पुष्पों से शाला की सुंदरता बढ़ जाती हैं। शाला में किचन गार्डन में मौसमी सब्ज़ियां उगाई जाती है जिससे शाला परिसर हरा-भरा दिखाई देता है।

वर्तमान में हमारा विद्यालय सुंदर स्वच्छ, हरा-भरा तथा सुविधा युक्त हो गया है। बच्चे अनुशासित तथा सामान्य स्तर से ऊपर स्तर पर है। स्वच्छता का ज्ञान है तथा विद्यालय के प्रति उनमें रुचि एवं उत्साह भी रहता है। वर्तमान में कुल दर्ज 29 है तथा दो शिक्षक पदस्थ है जिससे शाला का संचालन तथा शिक्षण कार्य सही तरीके से हो रहा है। शाला प्रबंधन समिति की सक्रिय सहभागिता बनी हुई है। माताओं का भी सहयोग निरंतर मिल रहा है। बच्चों की उपस्थिति 100% रहती थी। बच्चे स्वस्थ तथा स्वस्थ वातावरण में अपना बौद्धिक तथा शारीरिक विकास कर रहे हैं।

शा.प्रा.शाला विश्रामपुर
संकुल-तुलसी (मानपुर), वि.खं.- तिल्दा नेवरा, जिला-रायपुर (छत्तीसगढ़)

शिक्षा सबसे अच्छी मित्र है, एक शिक्षित व्यक्ति हर जगह सम्मान पाता है।
REDMI NOTE 9 PRO MAX
AI QUAD CAMERA

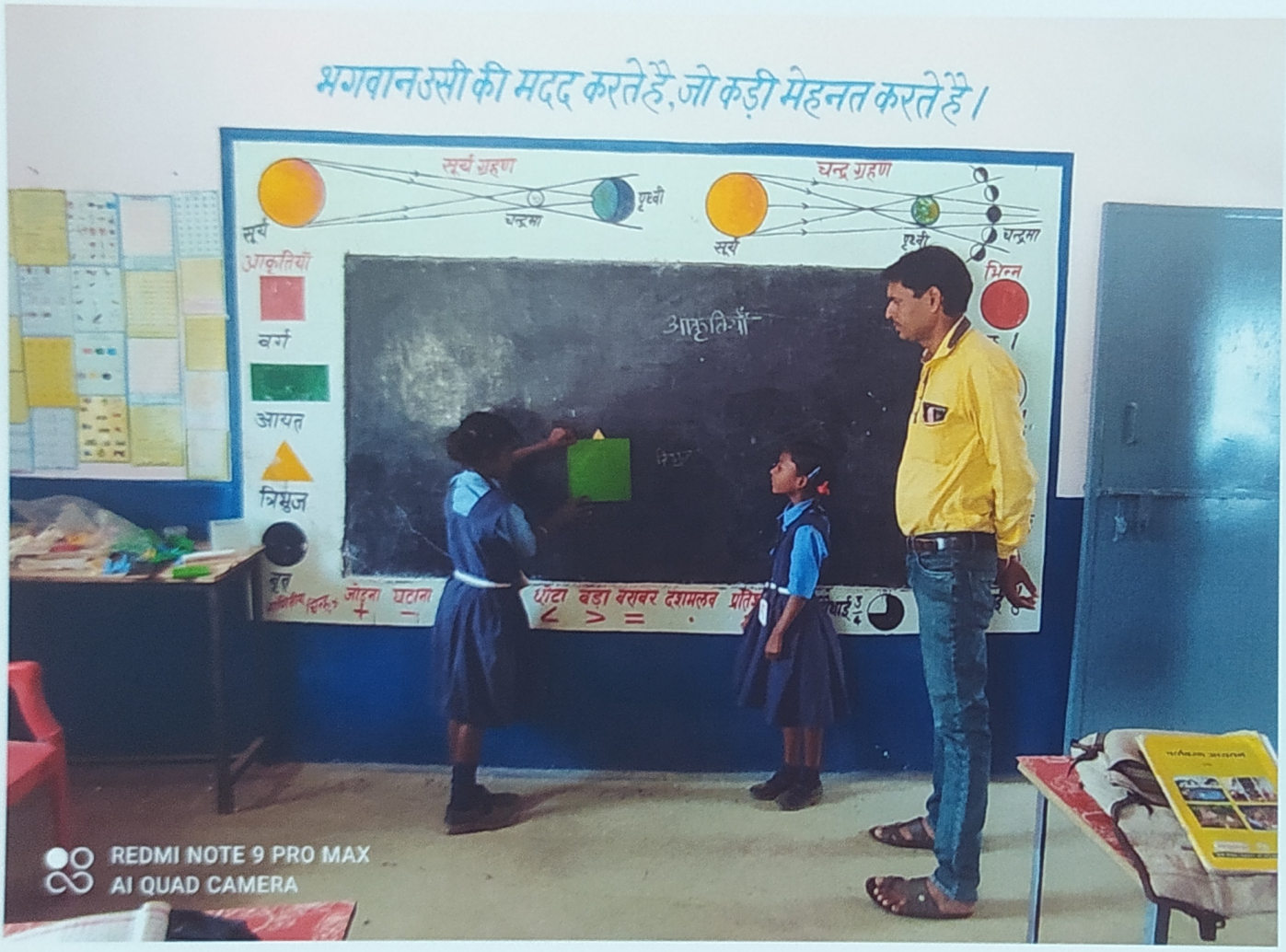
भगवान उसी की मदद करते हैं, जो कड़ी मेहनत करते हैं।
सूर्य ग्रहण
सूर्य
पृथ्वी
चन्द्रमा
चन्द्र ग्रहण
सूर्य
पृथ्वी
चन्द्रमा
आकृतियाँ
वर्ग
आयत
त्रिभुज
वृत्त
भिन्न
आकृतियाँ
जोड़ना घटाना
+ −
< > =
REDMI NOTE 9 PRO MAX
AI QUAD CAMERA

पढ़ना कभी भी बंद न करें क्योंकि
ज्ञान की कोई सीमा नहीं होती।
महीनों के नाम
जनवरी
7 JULY
जुलाई
सितम्बर
नवम्बर
दिसम्बर
हिन्दी वर्णमाला
NUMBERS
सफलता का रास्ता शिक्षा से होकर
गुजरता है।

बना रहेगा ।
बारहखड़ी
माता-पिता और गुरु का सदा सम्मान करना चाहिए ।
10
TEN
दस
REDMI NOTE 9 PRO MAX
AI QUAD CAMERA

शास. प्राथ. शाला - विश्रामपुर (नकटी)
शासकीय प्राथमिक शाला विश्रामपुर
• यू डाइस कोड-221108055
• संकुल केन्द्र - अल्दा
• विकास खण्ड - तिल्दा नेवरा
• जिला - रायपुर
• राज्य - छत्तीसगढ़
• पिन कोड - 493195
REDMI NOTE 9 PRO MAX
AI QUAD CAMERA

REDMI NOTE 9 PRO MAX
AI QUAD CAMERA

MI NOTE 8
UAD CAMERA

शासकीय प्राथमिक शाला-विश्रामपु
विकासखण्ड - तिल्दा नेवरा, जिला - रायपुर (छ.ग.)
ONE
FOUR
चार
FIVE
पाँच
SIX
SEVEN
EIGHT
REDMI NOTE 9 PRO MAX

शा.प्रा.शाला विश्रामपुर (नकटी)
संकुल केन्द्र- अल्दा, वि.खं- तिल्दा नेवरा, जिला- रायपुर (छत्तीसगढ़)
INSECT
URN
UNHAPPY